# —अध्यात्म सूत्र सार्थ—

सूत्र—निरुपधिस्थितिर्हिता साध्या ॥१॥

अर्थ—उपाधि-निमित्त के आश्रय बिना जो आत्मा की स्वाभाविक स्थिति है वह हित रूप है और साध्य अर्थात् साधने योग्य (प्राप्त करने योग्य) है।

सूत्र—तस्याः साधिका निरुपधिदृष्टिः ॥२॥

अर्थ—उस निरुपधि स्थिति की साधन वाली (सिद्धि करने वाला) निरुपधि की दृष्टि अथवा निरुपधि दृष्टि है।

सूत्र—तस्याश्च स्वभावपरभावविवेकः ॥३॥

अर्थ—और उस निरुपधि दृष्टि का साधक स्वभाव और परभाव व विभाव का विवेक है।

सूत्र—तस्य च परीक्षा ॥४॥

अर्थ—और उस स्वपरभावविवेक का साधिका परीक्षा है।

सूत्र—सा प्रमाणात् ॥५॥

अर्थ—वस्तुस्वभाव की परीक्षा प्रमाण से होती है।

सूत्र—तस्यांशौ निश्चयव्यवहारनयौ ॥६॥

अर्थ—प्रमाण के अंश दो हैं १—निश्चयनय, २—व्यवहारनय।

सूत्र—स्वाश्रितो निश्चयः ॥७॥

अर्थ—जो स्व अर्थात् उसही एक द्रव्य के आश्रय में बोध है वह निश्चयनय है।

सूत्र—पराश्रितो व्यवहारः ॥८॥

अर्थ—जो पर अर्थ के आश्रय से बोध अथवा निरूपण है वह व्यवहारनय है।

सूत्र—निश्चयस्त्रेधा ॥९॥

अर्थ—निश्चयनय तीन प्रकार का है।

सूत्र—अशुद्धशुद्धपरमशुद्धभेदात् ॥१०॥

अर्थ—१—अशुद्ध निश्चयनय, २—शुद्ध निश्चयनय, ३—परमशुद्ध निश्चयनय के भेद से।

सूत्र—यथा स्वचतुष्टयस्यैव परिणत्याऽशुद्धो जीव इत्यवलोकनमशुद्धो निश्चयः ॥११॥

अर्थ—जैसे अपने चतुष्टय की ही परिणति से अशुद्ध जीव है ऐसा अवलोकन करना अशुद्ध निश्चयनय है।

सूत्र—शुद्धपरिणतो जीव इति शुद्धः ॥१२॥

अर्थ—जैसे अपने चतुष्टय की ही परिणति से शुद्ध परिणतजीव है ऐसा अवलोकन करना शुद्ध निश्चयनय है।

सूत्र—पर्यायगुणनिरपेक्षतया सामान्यभावेन द्रव्यदृष्टिः परम शुद्धनिश्चयनयः ॥१३॥

अर्थ—पर्याय और गुणकी अपेक्षा किये बिना सामान्यभावसे अर्थात् अभेद स्वभावसे द्रव्यकी दृष्टि होना परमशुद्ध निश्चयनय है।

सूत्र—निर्विकल्पकतया द्रव्यस्यानुभवनमर्थानुभवः ॥१४॥

अर्थ—निर्विकल्परूपसे द्रव्य का अनुभवन करना अर्थानुभव है।

सूत्र—व्यवहारस्त्वेकादशधा ॥१५॥

अर्थ—तथा व्यवहार ११ प्रकार का है।

सूत्र—आश्रयनिमित्तोभयसम्बन्धका उपचरितानुपचरितासद्भूतसद्भूतव्यवहारा अशुद्धशुद्धपरमशुद्धनिरपेक्षशुद्धनिरूपकाश्चेति ॥१६॥

अर्थ—१ आश्रय सम्बन्धक, २ निमित्त सम्बन्धक, ३ उभय सम्बन्धक, ४ उपचरितासद्भूत व्यवहार, ५ अनुपचरितासद्भूत व्यवहार, ६ उपचरितसद्भूत व्यवहार ७ अनुपचरितसद्भूत व्यवहार, ८ अशुद्धनिश्चयनयनिरूपक, ९ शुद्धनिश्चयनय निरूपक, १० परमशुद्धनिश्चयनयनिरूपक, ११ निरपेक्षशुद्ध निरूपक।

सूत्र—धनगृहचित्रादयो रागादेराश्रयाः ॥१७॥

अर्थ—धन, घर, चित्र आदिक रागादि भावके आश्रयभूत हैं।

सूत्र—द्रव्यकर्म निमित्तम् ॥१८॥

अर्थ—द्रव्यकर्म रागादिभावके निमित्तभूत हैं।

सूत्र—नोकर्मोभयम् ॥१९।

अर्थ—शरीर रागादिभावके आश्रयभूत भी हैं और निमित्तभूत भी हैं।

सूत्र—बुद्धिगा रागादय उपचरितासद्भूताः ॥२०॥

अर्थ—बुद्धिमें आये हुए रागादिक उपचरित असद्भूत हैं।

सूत्र—तेऽन्य अनुपचरितासद्भूताः ॥२१॥

अर्थ—बुद्धिमें न आ सकने योग्य रागादिक अनुपचरित असद्भूत हैं।

सूत्र—मतिज्ञानादय उपचरितसद्भूताः ॥२२॥

अर्थ—मतिज्ञान आदिक उपचरितसद्भूत हैं।

सूत्र—ज्ञानं गुण इत्यादिरनुपचरितसद्भूतः ॥२३॥

अर्थ—"ज्ञान गुण है" इत्यादि अनुपचरितसद्भूत हैं।

अर्थ—ऊपर कहे गये अशुद्धनिश्चय आदिकोंका प्ररूपण करना व्यवहार है।

सूत्र- अन्याश्च यावत्यो दृष्टयस्तावन्तो नया. ॥२५॥

अर्थ—और भी जितनी दृष्टियां हैं उतने वे सब नय हैं।

इति श्रीमत्सद्ज्ञानदर्शिविरचिते स्वतत्त्वाधिगमे अध्यात्मसूत्रे निश्चयव्यवहारप्ररूपक प्रथमोऽध्याय ।

---

## अथ द्वितीयोऽध्यायः

सूत्र—जीवपुद्गलधर्माधर्माकाशकाला द्रव्याणि ॥ १ ॥

अर्थ—जाति की दृष्टि से द्रव्य ६ हैं—१ जीव, २ पुद्गल ३ धर्म, ४ अधर्म ५ आकाश, ६ काल।

सूत्र—जीवा अनन्तानन्ता ॥ २ ॥

अर्थ—जीव अनंतानंत ( अक्षयानंत ) हैं।

सूत्र—पुद्गलास्ततोऽप्यनन्तगुणा ॥ ३ ॥

अर्थ—पुद्गल द्रव्य, जीव द्रव्य के परिमाण से भी अनन्त गुणे हैं।

सूत्र—धर्माधर्माकाशा एकैकम् ॥ ४ ॥

अर्थ—धर्म अधर्म आकाश ये तीनों एक एक अखंड द्रव्य हैं।

सूत्र—कालाणवोऽसंख्याता ॥ ५ ॥

अर्थ—काल द्रव्य ( कालाणु ) असंख्यात हैं।

सूत्र—स्वस्वपरिणत्यैवैतानि परिणमन्ते ॥६॥

अर्थ—ये समस्त द्रव्य अपने अपने चतुष्टय की परिणति से ही परिणमते हैं।

सूत्र—अन्वयव्यतिरेकसम्बन्धाविच्छिन्नानीतराणि निमित्तानि ॥७॥

अर्थ—अन्वय व्यतिरेक सम्बन्धवाले इतर पदार्थ निमित्तमात्र हैं।

सूत्र—यस्मिन् सत्येव परिणतिः सोऽन्वयः ॥८॥

अर्थ—जिसके उपस्थित होने पर ही उपादान में परिणति हो वह अन्वयसम्बन्ध है।

सूत्र—नासति व्यतिरेकः ॥९॥

अर्थ—जिसके उपस्थित न होने पर उपादान में परिणति न हो वह व्यतिरेक सम्बन्ध है।

सूत्र—विवक्षित परिणममानमुपादानम् ॥१०॥

अर्थ—परिणमता हुआ विवक्षित कोई द्रव्य उपादान कहलाता है।

सूत्र—अत्यन्ताभाववदन्यसम्बन्धानि निमित्तानि ॥११॥

अर्थ—अत्यन्ताभाव वाले अन्य पदार्थों का उक्त सम्बन्ध जिनके है वे निमित्त कहलाते हैं।

सूत्र—यथा रागादेरुपादानमशुद्धपरिणतो जीवः ॥१२॥

अर्थ—जैसे रागादि भाव का उपादान अशुद्धि परिणति से परिणत जीव है।

सूत्र—निमित्तानि च कर्माणि ॥१३॥

अर्थ—और रागादिभाव के निमित्त कर्म हैं।

सूत्र—रागादयोऽशुद्धनिश्चयेनात्मनः ॥१४॥

अर्थ—रागादिभाव अशुद्धि निश्चयनय से आत्मा के हैं।

सूत्र—निमित्तापेक्षया व्यवहारेण वा कर्मणाम् ॥१५॥

अर्थ—निमित्त की अपेक्षा से अथवा व्यवहारनय से रागादिभाव कर्मों के हैं।

सूत्र—शुद्धनिश्चयेन सन्त्येव न ॥१६॥
अर्थ—शुद्ध निश्चय से रागादिक हैं ही नहीं।

सूत्र—प्रथमक्षणस्थकैवल्यस्य निमित्त कर्मक्षयः ॥१७॥
अर्थ—प्रथम क्षण में हुई कैवल्य अवस्था का निमित्त कर्म का क्षय है।

सूत्र—उपादान शुद्धात्मा ॥१८॥
अर्थ—कैवल्य अवस्था का उपादान शुद्ध आत्मा है।

सूत्र—निश्चयेनात्मजम् ॥१९॥
अर्थ—वह कैवल्य परिणमन निश्चय से आत्मज ( आत्मा से हुआ ) है।

सूत्र—व्यवहारेण क्षायिकम् ॥२०॥
अर्थ—वह कैवल्य परिणमन व्यवहारनय से क्षायिक ( कर्म क्षय से हुआ ) है

सूत्र—अनन्तरवर्तिशुद्धीनामुपादान शुद्धात्मा ॥२१॥
अर्थ—इसके अनन्तर होने वाली शुद्ध परिणतियों का उपादान शुद्ध आत्मा है।

सूत्र—निमित्त कालमात्रम् ॥२२॥
अर्थ—अनन्तर होते रहने वाली शुद्ध परिणतियों का निमित्त मात्र काल द्रव्य है।

सूत्र—सम्यक्त्वाविर्भावस्योपादान श्रद्धालुः ॥२३॥
अर्थ—सम्यक्त्व की उत्पत्ति का उपादान श्रद्धान करने वाला आत्मा है।

सूत्र—श्रोतृश्रद्धाज्ञानित्वप्राप्तवस्त्वनुदेश्यकदेशना निमित्तं ॥२४॥
अर्थ—श्रोता की श्रद्धा में ज्ञानीपन को प्राप्त और वस्तु स्वरूप के अनुरूप उपदेश करने वाले गुरु की देशना निमित्त है।

सूत्र—विम्बदर्शनादीनि च ॥२५॥

अर्थ—और जिनविम्बदर्शन वदनानुभव आदि भी सम्यक्त्व की उत्पत्ति के बाह्य कारण हैं।

सूत्र—एवमन्येष्वपि प्रयोज्यम् ॥२६॥

अर्थ—इसी प्रकार अन्य द्रव्यों के सम्बन्ध में भी नय विभाग, निमित्त, उपादान, स्वामित्व आदि लगा लेना चाहिये।

इति श्रीमत्सहजानन्दवर्णिविरचिते स्वतत्त्वाधिगमे अध्यात्मसूत्रे उपादाननिमित्तप्ररूपको द्वितीयोऽध्याय।

---

## अथ तृतीयोऽध्याय:

सूत्र—परिणममान कर्ता ॥१॥

अर्थ—जो परिणमन कर रहा है वह कर्ता है।

सूत्र—परिणाम कर्म ॥२॥

अर्थ—जो परिणाम (वर्तमान वर्तन) है वह कर्म है।

सूत्र—परिणति क्रिया ॥३॥

अर्थ—जो परिणति है परिणमन (क्रिया) है वह क्रिया है।

सूत्र—इति वस्तु स्वस्यैव स्वक्रिययैव स्वयं कर्ता ॥४॥

अर्थ—इस प्रकार वस्तु अपनी क्रिया ही के द्वारा अपना ही स्वयं कर्ता होता है।

सूत्र—अन्यन्निमित्तमात्रम् ॥५॥

अर्थ—परिणमते हुए द्रव्य के अतिरिक्त अन्य अन्वय-व्यतिरेक निमित्तमात्र हैं।

सूत्र—निमित्त प्राप्योपादान स्वप्रभाववत् ॥६॥

अर्थ—निमित्त को पाकर उपादान अपने प्रभाव वाला होता है।

सूत्र—एष परिणममानद्रव्यस्वभाव ॥७॥

अर्थ—यह परिणमते हुए द्रव्य का स्वभाव ही है कि निमित्त को पाकर उपादान अपने प्रभाववाला होता है।

सूत्र—परिणामोद्वेधा स्वभावविभावभेदात् ॥८॥

अर्थ—परिणाम २ प्रकार का है १—स्वभाव परिणाम, २—विभाव परिणाम।

सूत्र—स्वभावपरिणामो नियतो विविधनिमित्तानपेक्षत्वात् ॥६॥

अर्थ—स्वभाव परिणमन नियत है क्योंकि स्वभाव परिणमन विविध निमित्तों की अपेक्षा आश्रय बिना होता है।

सूत्र—विभावपरिणामो नियतोऽनियतश्च ॥१०॥

अर्थ—विभाव परिणाम अपेक्षा से दोनों प्रकार के हैं, नियत और अनियत।

सूत्र—सकलविशेषज्ञाभ्यां ज्ञातस्तथात्र यदा यदपि भवत्तस्य भवनाच्च नियत ॥११॥

अर्थ—सर्वज्ञ व विशेषज्ञानी अवधिज्ञानी, मन पर्ययज्ञानी व निमित्त ज्ञानी आदि द्वारा भविष्य ज्ञात हो जाने से और जहां पर जब जो भी होना हो उसके ही होने से विभाव परिणाम नियत है।

सूत्र—सोऽपि प्रतिक्षणपरिणतिपूर्वक ॥१२॥

अर्थ—यह विभाव परिणाम भी जिसे नियत सिद्ध किया है प्रति समय की परिणति (पुरुषार्थ विकास) पूर्वक होता है।

सूत्र—विशिष्टक्रमवर्तकगुणाभावादन्यविशिमित्त प्राप्य भवनाच्चा नियत ॥१३॥

अर्थ—विभाव का परिणमन नियत नहीं है क्योंकि विशिष्ट ( इसके बाद यह हो इसके बाद यह हो ऐसे ) क्रम को बनाने वाला कोई गुण द्रव्य में नहीं है, तथा विभाव अन्य द्रव्यों का निमित्तविशेष पाकर होता है ।

सूत्र—निमित्तसन्निधानेऽपि वस्तु स्वैकत्वगतमेव ॥१४॥

अर्थ—निमित्तों की उपस्थिति होने पर भी वस्तु अपनी एकता ही में निष्ठ है ।

सूत्र—परस्य परे सम्बन्धाभावात् ।१५॥

अर्थ—क्योंकि पर पदार्थ का किन्हीं भी अन्य पर पदार्थों से संबंध नहीं है ।

सूत्र—अन्योऽन्यकर्तृत्वमुपचार ॥१६॥

अर्थ—किसी को किसी का कर्ता कहना उपचार मात्र है ।

सूत्र—स्वपरिणामकर्तृत्व निश्चय ॥१७॥

अर्थ—अपने ही परिणमन का कर्तापन समझना निश्चय है ।

सूत्र—अशुद्धनिश्चयेनात्मनो रागादिकर्तृत्वम् ॥१८॥

अर्थ—आत्मा के रागादि का कर्तापन अशुद्ध निश्चयनय से है ।

सूत्र—शुद्धनिश्चयेन स्वच्छभावकर्तृत्वम् ॥१९॥

अर्थ—शुद्ध निश्चयनय से आत्मा स्वच्छ ( निर्मल ) भाव का कर्ता है ।

सूत्र—परमशुद्धनिश्चयनयेनाकर्तृत्वम् ॥२०॥

अर्थ—परम शुद्ध निश्चयनय से आत्मा अकर्ता है ।

सूत्र—परिणमनमेव कर्तृत्वम् ॥२१॥

अर्थ—पदार्थ का परिणमन होना ही पदार्थ का कर्तापन है।

सूत्र—विभावपरयोः कर्तृत्वबुद्धिरज्ञानम् ॥२२॥

अर्थ—विभाव भाव का व परपदार्थ का मैं कर्ता हूँ इस बुद्धि का होना अज्ञान है।

सूत्र—कैवल्यपरयोर्भेदविज्ञानाभावात् ॥२३॥

अर्थ—क्योंकि आत्मा के केवलभाव और पर अर्थों में अज्ञानी के भेदविज्ञान का अभाव है।

सूत्र—भेदविज्ञानतः स्वस्याकर्तृत्वावधारणे सति पुनरभेदज्ञान स्वभावस्थैर्यं शिवोपायः ॥२४॥

अर्थ—भेद विज्ञान के बल से अपने के अकर्तापन का निश्चय होने पर फिर अभेद ज्ञानस्वभाव में स्थिरता होना शिव, कल्याण, सुख या मोक्ष का उपाय है।

सूत्र—स च सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रत्रयात्मक एव ॥२५॥

अर्थ—और यह सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र इन तीनों की एकता स्वरूप ही है।

सूत्र—सकलनयपक्षातिक्रान्तश्च ॥२६॥

अर्थ—और यह सकलनय पक्षों से अतिक्रांत (पृथक्) है।

इति श्रीमत्सहजानन्दवर्णिविरचिते स्वतत्त्वाधिगमे अध्यात्मसूत्रे कर्तृकर्मत्वप्ररूपकस्तृतीयोऽध्यायः।



# अथ चतुर्थोऽध्यायः

सूत्र—अनादिबद्धजीवकृतकषायं निमित्तीकृत्य प्रकृतिन्यमापन्नो विस्रसोपचय कर्म ॥१॥

अर्थ—अनादिकाल से बद्ध जीव के द्वारा किये गये कषायों के निमित्त से प्रकृतिपन को प्राप्त हुआ विस्रसोपचय रूप पुद्गल कर्म है।

सूत्र—तल्लोकबुद्धेर्द्विविधं, पुण्यं पापं च ॥२॥

अर्थ—वह कर्म लोकबुद्धि की अपेक्षा से २ प्रकार का है-१ पुण्य कर्म २ पाप कर्म।

सूत्र—प्रत्येकं द्विधा ॥३॥

अर्थ—प्रत्येक कर्म पुण्य और पाप के भेद से २ प्रकार का है—

सूत्र—चेतनाचेतनाभ्यां भावद्रव्याभ्यां वा ॥४॥

अर्थ—चेतन और अचेतन के भेद से अथवा भाव और द्रव्य के भेद से वे दो दो प्रकार के हैं—१ चेतन पुण्य २ अचेतन पुण्य। १ चेतन पाप, २ अचेतन पाप। अथवा १ भाव पुण्य, २ द्रव्य पुण्य। १ भाव पाप २ द्रव्य पाप।

सूत्र—सातादिविकल्पो भावपुण्यम् ॥५॥

अर्थ—साता आदि रूप परिणाम को भाव पुण्य कहते हैं।

सूत्र—तन्निमित्तभूतं कर्म द्रव्यपुण्यम् ॥६॥

अर्थ—सातादि परिणामों का निमित्तभूत कर्म द्रव्य पुण्य है।

सूत्र—असातादिविकल्पो भावपापम् ॥७॥

अर्थ—असाता आदि परिणामों को भाव पाप कहते हैं।

सूत्र—तन्निमित्तभूतं कर्म द्रव्यपापम् ॥८॥

अर्थ—असाता आदिरूप परिणामों का निमित्तभूत कर्म द्रव्य पाप है।

सूत्र—कर्मत्वशक्तिर्वा भाव: ॥९॥

अर्थ—अथवा ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म में जो कर्मत्व शक्ति है उसे भावकर्म कहते हैं।

सूत्र—हेतुस्वभावानुभवाश्रयाभेदात्कर्म ह्येकम् ॥१०॥

अर्थ—वास्तव में तो हेतु स्वभाव अनुभव व आश्रय का भेद न होने से सभी कर्म (पुण्य व पाप) एक ही हैं-समान ही हैं।

सूत्र—विकारास्रवणमास्रव: ॥११॥

अर्थ—विकार के आने को आस्रव कहते हैं।

सूत्र—स्वभावच्युतिर्बंध ॥१२॥

अर्थ—अपने स्वभाव से च्युत हो जाने को बंध कहते हैं।

सूत्र—तावपि द्विविधौ ॥१३॥

अर्थ—बंध भी २ प्रकार का है-

सूत्र—भावद्रव्याभ्यां जीवाजीवाभ्यां वा ॥१४॥

अर्थ- १ भावबंध, २ द्रव्यबंध। अथवा १ जीवबंध, २ अजीवबंध।

सूत्र—त्रयं विकार्यविकारकोभयमास्राव्यास्रावकोभयं बंध्यबंधकोभयं च ॥१५॥

अर्थ—ये तीनों—१ पुण्य पाप, २ आस्रव और ३ बंध दो दो प्रकार के हैं विकार्य पुण्य पाप विकारक पुण्य पाप। आस्राव्य आस्रव, आस्रावक आस्रव। बंध्य बंध, बंधक बंध। इस सूत्र में उभय शब्द विशेष है जिसका अर्थ है दोनों का उभय इससे यह संकेत लेना चाहिए कि ये सर्वथा स्वतंत्र होकर किसी एक भेद रूप नहीं हैं किन्तु परस्पर एक दूसरे की अपेक्षा लेकर ही अपना स्वरूप रखते हैं।

सूत्र—ज्ञेय हेय सर्वम् ॥१६॥

अर्थ—उक्त भेद रूप पदार्थ हेय जानना चाहिए।

सूत्र—पुण्यपापास्रवबंधविविक्त आत्मस्वभाव उपादेय ॥१७॥

अर्थ—पुण्य पाप, आस्रव और बंध से विलक्षण (भिन्न) आत्मा का स्वभाव उपादेय है।

सूत्र—तस्योपलब्धि: शुद्धोपयोगात् ॥१८॥

अर्थ—उस आत्मस्वभाव की प्राप्ति शुद्धोपयोग से होती है।

सूत्र—स चाशुद्धापेक्षयात् ॥१९॥

अर्थ—और वह शुद्धोपयोग अशुद्ध की अपेक्षा से प्रगट होता है।

सूत्र—स च भेदविज्ञानात् ॥२०॥

अर्थ—और वह अशुद्ध के प्रति उदासीनता भेद विज्ञान से होती है।

सूत्र—तज्ज्ञानस्वभावस्य शुचित्वस्वभावभूतध्रुवशरणानाकुलत्वा-
देरास्रवादीनां तद्विपरीतत्वादेश्च परीक्षणात् ॥२१॥

अर्थ—"वह" ज्ञान स्वभाव पवित्र, स्वभाव भूत, ध्रुव, शरण रूप, और निराकुल है किन्तु आस्रवादि अशुचि, विभाव रूप अध्रुव अशरण और आकुलता रूप हैं। इस प्रकार दोनों की परीक्षा से वह भेद विज्ञान प्रगट होता है।

इति श्रीमत्सहजानन्दवर्णिविरचिते स्वतत्त्वाधिगमे अध्यात्मसूत्रे
निश्चयव्यवहारप्ररूपक चतुर्थोऽध्याय ।

# अथ पंचमोऽध्यायः

सूत्र—विकारानुत्पत्तिः संवरः ॥१॥

अर्थ—विकारों की उत्पत्ति न होना सो संवर है।

सूत्र—स मुख्यमुपादेय तत्त्वम् ॥२॥

अर्थ— यह संवर भाव मुख्य उपादेय तत्त्व है।

सूत्र—मोक्षमूलत्वात् मोक्षेऽपि वर्तमानत्वाच्च ॥३॥

अर्थ—क्योंकि संवर मोक्ष का मूल है और मोक्ष होने पर भी संवर (कर्मों का उत्पन्न न होना) बना रहता है।

सूत्र—तस्य मूलं स्वभावविभावयोर्भेदविज्ञानम् ॥४॥

अर्थ—संवर भाव का कारण स्वभाव और विभाव का भेद विज्ञान है।

सूत्र—तस्माच्छुद्धात्मरुचि ॥५॥

अर्थ—भेदविज्ञान के अनंतर शुद्ध आत्मा में रुचि होती है।

सूत्र—ततः शुद्धात्मोपलम्भ ॥६॥

अर्थ—शुद्धात्मरुचि के अनंतर शुद्ध आत्मा की प्राप्ति होती है।

सूत्र—ततोऽध्यवसानाभावः ॥७॥

अर्थ—शुद्धात्मा की प्राप्ति से अध्यवसान भावों का अभाव होता है।

सूत्र—ततो रागद्वेषमोहानामभावः ॥८॥

अर्थ—अध्यवसान के अभाव से रागद्वेष और मोह आदि विभावों का अभाव होता है।

सूत्र—ततः कर्माभावः ॥९॥

अर्थ- रागद्वेष और मोह के अभाव से शेष कर्मों का भी अभाव हो जाता है।

सूत्र—ततो नोकर्माभाव. ॥१०॥

अर्थ—द्रव्य कर्मों का अभाव होने से शरीर का अभाव हो जाता है।

सूत्र—तत ससाराभाव. ॥११॥

अर्थ—शरीर का अभाव होने से ससार का अभाव हो जाता है।

सूत्र—ससाराभावे सदा तेषामभाव ॥१२॥

अर्थ—ससार का अभाव होने पर पूर्वोक्त सब मलों का सदा के लिए अभाव बना रहता है।

सूत्र—शुद्धात्मोपलम्भस्य सदा प्रवर्तमानत्वात् ॥१३॥

अर्थ—क्योंकि शुद्धात्मा की उपलब्धि सदा बनी रहती है।

सूत्र—संवरो द्वेधा ॥१४॥

अर्थ—संवर २ प्रकार का है।

सूत्र—भावद्रव्याभ्यां चेतनाचेतनाभ्यां वा ॥१५॥

अर्थ—१ भाव सवर २ द्रव्य सवर। अथवा १ चेतन सवर, २ अचेतन सवर।

सूत्र—तद्द्वय संवार्यसंवारकोभयम् ॥१६॥

अर्थ—वे दोनों प्रकार के सवर दो दो प्रकार के हैं १ सवार्य और २ संवारक।

सूत्र—संवार्यो विभावानास्रव ॥१७॥

अर्थ—विभावों का न आना सवार्य भावसवर है।

सूत्र—द्रव्यानास्रवश्च ॥१८॥

अर्थ—और द्रव्य कर्मों का न आना संवार्य द्रव्यसवर है।

सूत्र—संवारकः शुद्धपरिणाम ॥१९॥

अर्थ—शुद्ध परिणाम वर्तना सवारक भाव सवर है।

अर्थ—विभाव परिणामों में निमित्तपन से अभाव होने की स्थिति से रहना संवारक द्रव्य संवर है।

सूत्र—संवारकसंवार्यत्वे जीवाजीवौ मुख्यौ ॥२१॥

अर्थ—संवारकपने में जीवसंवर मुख्य है और संवार्यपने में अजीव संवर मुख्य है।

सूत्र—आदेयमिदं तत्त्वमानिर्विकल्पात् ॥२२॥

अर्थ—यह संवर तत्त्व निर्विकल्प अवस्था से पहिले आदेयरूप ( ग्रहण करने योग्य ) है।

इति श्रीमत्सहजानन्दवर्णिविरचिते स्वतत्त्वाधिगमे अध्यात्मसूत्रे निश्चयव्यवहारप्ररूपकः—पंचमोऽध्याय ।



## अथ षष्ठोऽध्यायः

सूत्र—निकृतिनिर्झरणं निर्जरा ॥१॥

अर्थ—विकार का झड़ जाना निर्जरा है।

सूत्र—सैव मोक्षोपाय ॥२॥

अर्थ—यह (संवर पूर्वक) निर्जरा ही मोक्ष का उपाय है।

सूत्र—द्वेधा ॥३॥

अर्थ—निर्जरा २ प्रकार की है।

सूत्र—भावद्रव्ययोः ॥४॥

अर्थ—१ भाव निर्जरा, २ द्रव्य निर्जरा

सूत्र—वीतरागनिर्विकल्पसमाधिर्भावनिर्जरा ॥५॥

अर्थ—रागद्वेष रहित, निर्विकल्प समाधिभाव, भाव निर्जरा है।
क्योंकि यह समाधिभाव विकारों का अभाव करता है।

सूत्र—बंधानिमित्त निष्फलं कर्मनिर्जरणं द्रव्यनिर्जरा ॥६॥
अर्थ—बंध का कारण न होते हुए फलरहित कर्मों की निर्जरा होना द्रव्य निर्जरा है।

सूत्र—ते च परमार्थतत्वद्रष्टुरेव ॥७॥
अर्थ—ये दोनों प्रकार की निर्जराये निर्विकल्प स्व आत्मतत्व का अनुभव करने वाले के ही होता है।

सूत्र—स चान्तर्बहिर्निःशंकितः ॥८॥
अर्थ—और वह परमार्थद्रष्टा (सम्यग्दृष्टि) भातर (अंतरंग में) और बाहिर संदेह या भय से रहित होता है।

सूत्र—अनाकांक्षः ॥९॥
अर्थ—सम्यग्दृष्टि आकांक्षाओं से रहित होता है।

सूत्र—निर्विचिकित्स ॥१०॥
अर्थ—सम्यग्दृष्टि दुःख में, धर्मात्माओं की सेवा में, अथवा अपवित्र वस्तुओं में ग्लानि नहीं करता।

सूत्र—अमूढ ॥११॥
अर्थ—वह आत्मा के स्वरूप में, अन्य तत्वों में व देव गुरु शास्त्र के स्वरूप में, मूढ़ता रहित होता है।

सूत्र—उपगूहक ॥१२॥
अर्थ—वह अपने गुण और दूसरों के दोषों को प्रगट नहीं करता।

सूत्र—स्थितिस्थापक ॥१३॥
अर्थ—वह परमार्थद्रष्टा, मोक्ष मार्ग से भ्रष्ट होते हुए अपने को तथा दूसरों को मोक्ष मार्ग में स्थिर करने वाला होता है।

सूत्र—धर्मवत्सलः ॥१४॥

अर्थ—वह धर्म और धर्मात्माओं में हार्दिक प्रेम रखता है।

सूत्र—प्रभावकश्च ॥१५॥

अर्थ—वह अंतरात्मा रत्नत्रय स्वरूप आत्मा या धर्म का प्रभाव प्रगट करने वाला होता है।

सूत्र—परास्थितिनिर्ज्जरार्थं स्वभावविभावौ भित्त्वा स्वभाव उपलम्भनीय ॥१६॥

अर्थ—परपदार्थ में रुके रहने का अभाव करने के लिये स्वभाव और विभाव को भेदन करके स्वभाव की उपलब्धि करना चाहिये।

सूत्र-निरुपधिरुपादानकारणीभूतएकीकृतशुद्धपर्याय स्वभावः॥१७॥

अर्थ—स्वभाव उपाधिरहित उपादानकारणरूप और शुद्ध पर्याय की एकतारूप होता है।

सूत्र—आत्मनोऽनादनाधनताहेतुकासाधारणज्ञानस्वभावः ॥१८॥

अर्थ—आत्मा का वह स्वभाव अनादि अनंत अहेतुक और असाधारण ज्ञानरूप है।

सूत्र—तत्स्थैर्याय सकलरागविकल्पास्त्याज्या ॥१९॥

अर्थ—उस स्वभाव में उपयोग की स्थिरता के लिये समस्त रागादि विकल्पों को छोड़ देना चाहिए।

सूत्र—तत्त्यागाय स्वभावो दृश्यः ॥२०॥

अर्थ - रागद्वेषादि विकल्पों का त्यागने के लिये निज आत्म स्वभाव का अवलोकन करना चाहिये।

सूत्र—तमभिप्रेत्य बाह्यसंयोग निवर्तयेत् ॥२१॥

अर्थ—इस ही आशय को लेकर बाह्य पदार्थों का संयोग दूर करना चाहिये।

सूत्र—स्वभावमाश्रित्य स्वमिदतयाऽनुभवेत् ॥२२॥

अर्थ—स्वभाव का अवलम्बन करके यह ही मैं हूँ इस प्रकार, अपने का अनुभव करना चाहिये।

सूत्र—शुद्ध चिद्रूपोऽहम् ॥२३॥

अर्थ—"मैं शुद्ध चैतन्यस्वरूप हूँ" ऐसी भावना हो होकर निर्विकल्प अनुभूति रहना चाहिये।

इति श्रीमत्सहजानंदवर्णिविरचिते, स्वतत्त्वाधिगमे, अध्यात्मसूत्रे निश्चयव्यवहारप्ररूपक षष्ठोऽध्यायः।



## अथ सप्तमोऽध्यायः

सूत्र—पूर्णशुद्धस्वरूपमवस्थान मोक्षः ॥१॥

अर्थ—पूर्ण शुद्ध स्वरूप में स्थिर अवस्थान होना मोक्ष है।

सूत्र—तत्सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रैकत्वम् ॥२॥

अर्थ—यह स्वरूपमवस्थान सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्-चारित्र की एकता स्वरूप है।

सूत्र—विशुद्धज्ञानदर्शनस्वरूपनिजशुद्धात्मानुभूतिः सम्यग्दर्शनम् ॥३॥

अर्थ—विशुद्ध ज्ञान दर्शन स्वरूप निजशुद्धात्मा का अनुभव सम्यग्दर्शन है।

सूत्र—अखण्डस्वरूपप्रतीत्या सह वस्तुनतिः सम्यग्ज्ञानम् ॥४॥

अर्थ—अखण्ड स्वरूप की प्रतीति के साथ वस्तु का जानना सम्यग्ज्ञान कहलाता है।

सूत्र—विकृतिपरिहरणस्वभावेन ज्ञप्तिस्थिति: सम्यक्चारित्रम् ॥५॥

अर्थ—रागद्वेषादि विकार के परिहार पूर्वक स्वाभाविक रूप से ज्ञान का परिणमन होना सम्यक् चारित्र है।

सूत्र—निरंतर त्रयाणामेकत्वं ज्ञातृत्वमात्रम् ॥६॥

अर्थ—भेद रहित सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन तीनों की एकता होने को ज्ञातृत्वमात्र कहते हैं।

सूत्र—उपधिमोचनं वा मोक्ष ॥७॥

अर्थ—अथवा उपाधि और औपाधिक भावों का सर्वथा दूर हो जाना मोक्ष है।

सूत्र—स बंधच्छेदात् ॥८॥

अर्थ—वैभाविक भावों का अभाव बंध के अभावसे होता है।

सूत्र—स बंधभावारागात् ॥९॥

अर्थ बंध का विनाश बंधरूप भावों में राग न होने से हो जाता है।

सूत्र—स बंधात्मनो स्वभावभेदपरिज्ञानात् ॥१०॥

अर्थ—बंधभाव और आत्मतत्त्व इन दोनों के स्वभाव के भेद का परिज्ञान होने से बंधभाव में वैराग्य हो जाता है।

सूत्र—मोक्षो [illegible]धा ॥११॥

अर्थ—मोक्ष २ प्रकार है।

सूत्र—द्रव्यमावाभ्याम् ॥१२॥

अर्थ—१ द्रव्य मोक्ष और २ भाव मोक्ष।

सूत्र—तत्रापि द्वेधा मोक्ष्यमोचकभेदात् ॥१३॥

अर्थ—द्रव्यमोक्ष और भावमोक्ष ये दोनों दो दो प्रकार के हैं।

१ मोक्ष्य द्रव्य मोक्ष, २ मोचक द्रव्य मोक्ष तथा १ मोक्ष्य भावमोक्ष २, मोचक भाव मोक्ष।

सूत्र—भूतार्थेन स्वैकत्वमेव ॥१४॥

अर्थ—भूतार्थ दृष्टि से मोक्ष निज स्वभाव के एकत्व रूप ही है।

सूत्र—तद्धयेयं फलञ्च ॥१५॥

अर्थ—निज स्वभाव की एकता ध्येय रूप एवं फलस्वरूप है।

सूत्र—शान्तस्वरूपम् ॥१६॥

अर्थ—यह स्वभाव की एकता शान्त स्वरूप है।

सूत्र—शुद्धपरिणतिगतो धर्मो वा ॥१७॥

अर्थ—अथवा शुद्ध परिणति को प्राप्त हुआ आत्म स्वभाव रूप धर्म ही मोक्ष या स्वभाव की एकता है।

सूत्र—स्वास्ति ॥१८॥

अर्थ—यह शिव स्वभाव एकत्व सबके कल्याणरूप हो। अथवा यही, स्वाभाविक विकाश ही स्वस्ति=सु+अस्ति सब कल्याण रूप है।

इति श्रीमत्सहजानन्दवर्णिविरचिते स्वतत्त्वाधिगमे अध्यात्मसूत्रे भावद्रव्यमोक्षप्ररूपकः सप्तमोऽध्यायः।

# अथ अष्टमोऽध्यायः

सूत्र—पर्यायतो नानात्मगुणस्थानानि ॥१॥

अर्थ—पर्यायदृष्टि से आत्मा के गुणों के स्थान (श्रेणि) नाना प्रकार के हैं।

सूत्र—श्रद्धाचारित्रयोगैः ॥२॥

अर्थ—वे गुणस्थान श्रद्धा, चारित्र और योग के निमित्त से होते हैं।

सूत्र—विपरीताभिनिवेशो मिथ्यात्वम् ॥३॥

अर्थ—वस्तु का जैसा स्वतंत्र स्वरूप है उससे विपरीत अभिप्राय का होना मिथ्यात्व गुणस्थान है।

सूत्र—तदनादिबद्धस्यानादि ॥४॥

अर्थ—अनादि काल से मिथ्यात्व में बंधे हुए जीव के अनादि मिथ्यात्व होता है।

सूत्र—सम्यक्त्वच्युतस्य सादि ॥५॥

अर्थ—सम्यक्त्व को प्राप्त करके फिर उस से च्युत होने वाले जीव के सादि मिथ्यात्व होता है।

सूत्र—सम्यक्त्वासादने सासादनसम्यक्त्वम् ॥६॥

अर्थ—सम्यक्त्व की प्राप्ति के बाद अनंतानुबंधी कषाय के उदय से जब तक मिथ्यात्व में नहीं आ पाता तब तक सम्यक्त्व की विराधना रूप परिणामों को सासादन सम्यक्त्व कहते हैं।

सूत्र—मिश्राभिनिवेशो मिश्रम् ॥७॥

अर्थ—मिथ्यात्व गुणस्थान के बाद अथवा सम्यक्त्वप्राप्ति के बाद सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से होने वाले मिथ्यात्व और

सम्यक्त्वरूप मिश्र परिणाम को मिश्र गुणस्थान कहते हैं।

सूत्र—अविरतसम्यक्त्वम् ॥८॥

अर्थ—सम्यक्त्व होने पर भी अणुव्रत व महाव्रत रहित परिणाम हों तो उसे अविरतसम्यक्त्व गुणस्थान कहते हैं।

सूत्र—अयतो विरतो देशविरति ॥९॥

अर्थ—सम्यग्दर्शन सहित अणुव्रत रूप परिणामों को देशविरत गुणस्थान कहते हैं।

सूत्र—सर्वतः प्रमादे च प्रमत्तविरत ॥१०॥

अर्थ—पापों से पूर्ण विरक्त होने पर भी सज्वलन कषाय के उदय होने के कारण प्रमाद रूप भाव होता उसे प्रमत्तविरत गुणस्थान कहते हैं।

सूत्र—प्रमादरहितेऽप्रमत्तविरत ॥११॥

अर्थ—महाव्रती के प्रमाद का अभाव हो जाने पर अप्रमत्तविरत गुणस्थान होता है।

सूत्र—स द्वेधा ॥१२॥

अर्थ—यह अप्रमत्तविरत गुणस्थान २ प्रकार का है।

सूत्र—स्वस्थानसातिशयभेदात् ॥१३॥

अर्थ—१ स्वस्थान अप्रमत्तविरत और २ सातिशय [illegible]

सूत्र—प्रमत्ताप्रमत्तपरिवृत्तौ स्वस्थानी [illegible]

अर्थ—जो अप्रमत्तविरत, प्रमत्तविरत [illegible] वर्तित होता रहता है वह स्वस्थान [illegible]

सूत्र—सातिशयोऽध करणस्य ॥१४॥

अर्थ—अध करण रूप परिणामों में [illegible]

सातिशय अप्रमत्तविरत कहलाता है।

सूत्र—ततोऽपूर्वकरणश्चारित्रमोहस्योपशमकः क्षपको वा ॥१६॥

अर्थ—सातिशय अप्रमत्तविरत के अनन्तर चारित्रमोह का उपशम या क्षय प्रारम्भ करने वाला परिणाम अपूर्वकरण गुणस्थान कहलाता है।

सूत्र—अनिवृत्तिकरणश्च ॥१७॥

अर्थ—चारित्रमोह का उपशम या क्षय करने वाले एक समयवर्ती जीवों में भेदरहित सदृश परिणामों को अनिवृत्तिकरण गुणस्थान कहते हैं।

सूत्र—अवशिष्टसूक्ष्मसाम्परायजेता च ॥१८॥

अर्थ—शेष रहे सूक्ष्म लोभ कषाय को जीतनेवाला परिणाम सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान कहलाता है।

सूत्र—उपशान्तमोहः ॥१९॥

अर्थ—चारित्रमोह का पूर्ण उपशम कर चुकने वाला वीतराग भाव, उपशान्तमोह गुणस्थान कहलाता है।

सूत्र—क्षीणमोह ॥२०॥

अर्थ—चारित्रमोह का क्षय कर चुकने वाला वीतराग भाव क्षीणमोह गुणस्थान कहलाता है।

सूत्र—योगेन सहित सर्वज्ञ सयोगकेवली ॥२१॥

अर्थ—योगों से सहित किन्तु सकल द्रव्य गुण पर्यायों का ज्ञाता परमात्मा सयोग केवली है और उनकी शुद्ध परिणति को सयोग केवली गुणस्थान कहते हैं।

सूत्र—रहितोऽयोग ॥२२॥

अर्थ—योग से रहित सर्वज्ञ अरहन्त परमात्मा को अयोगकेवली कहते हैं और उनके पूर्ण यथाख्यातचारित्र रूप परिणामों को अयोगकेवली गुणस्थान कहते हैं।

सूत्र—अथ सिद्धो गुणस्थानातीतः ॥२३॥

अर्थ—इन १४ गुणस्थानों के बाद सम्पूर्ण कर्मों के क्षय से होने वाले सिद्ध भगवान गुणस्थानों के विकल्पों से रहित हैं।

सूत्र—गुणस्थानानीमानि क्रमाक्रमोभयरूपेण यथागमं योज्यानि ॥२४॥

अर्थ—ये सब गुणस्थान जीवों में क्रम से, अक्रम से अथवा क्रम और अक्रम दोनों रूप से आगम के अनुसार लगा लेना चाहिये।

सूत्र—सिद्धः सर्वतः पूर्णविशुद्धः ॥२५॥

अर्थ—सिद्ध भगवान सब तरह से पूर्ण निर्मल हैं। उनमें कोई भेद नहीं है।

सूत्र—ॐ नमः सिद्धाय ॥२६॥

अर्थ—गुणस्थानशुद्धि के फल स्वरूप गुणस्थानातीत सिद्धों के लिये नमस्कार हो।

इति श्रीमत्सहजानन्दवर्णिविरचिते स्वतन्त्राधिगमे अध्यात्मसूत्रे गुणस्थानसंकेतकोऽष्टमोऽध्यायः।



# अथ नवमोऽध्यायः

सूत्र—सर्वार्थेषु सारः समयः ॥१॥
अर्थ—सब पदार्थों में श्रेष्ठ पदार्थ आत्मा है

सूत्र—सोऽनन्तशक्तिकः ॥२॥
अर्थ—वह अनन्त शक्तिमान् है।

सूत्र—तत्र ज्ञानं मुख्यम् ॥३॥
अर्थ—इन अनन्त शक्तियों में ज्ञानगुण मुख्य है।

सूत्र—सर्वचेतकत्वात् ॥४॥
अर्थ—क्योंकि ज्ञान अपने को आत्मगुणों व पर्यायों को और दूसरे
सब पदार्थों व उनकी गुण पर्यायों का जानने वाला है।

सूत्र—तस्य पर्यायो द्वेधा ॥५॥
अर्थ—ज्ञान की पर्यायें दो प्रकार की हैं।

सूत्र—सम्यग्मिथ्याभेदात् ॥६॥
अर्थ—१ सम्यक्पर्याय, २ मिथ्यापर्याय।

सूत्र—मिथ्याज्ञानमुपचारात् ॥७॥
अर्थ—ज्ञान मिथ्याज्ञान है यह बात उपचार से है।

सूत्र—सम्यग्ज्ञानं सम्यक्त्वसहचारात् ॥८॥
अर्थ—सम्यग्ज्ञान नाम सम्यक्त्व के सम्बन्ध [illegible] होना है। वस्तुतः
ज्ञान न सम्यक् है और न मिथ्या है। वह तो मात्र जानने
वाला चैतन्य स्वरूप है।

सूत्र—सम्यग्ज्ञानानि मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ॥९॥

अर्थ—सम्यग्ज्ञान ५ तरह के हैं—१ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्ययज्ञान और ५ केवलज्ञान।

सूत्र—तत्र चत्वारि विकलज्ञानानि ॥१०॥

अर्थ—उन पांच सम्यग्ज्ञानों में से पहले के चार ज्ञान अपूर्ण ज्ञान हैं।

सूत्र—सकलज्ञानं केवलम् ॥११॥

अर्थ—पूर्णज्ञान केवलज्ञान है।

सूत्र—तन्निरन्तरं क्षणवर्ति प्रति ज्ञानस्वभावोपादानम् ॥१२॥

अर्थ—ज्ञानस्वभाव, जिसका उपादान है ऐसा केवलज्ञान निरंतर रहता और प्रतिक्षण बनता है।

सूत्र—सर्वपर्यायेष्वेकरूपमखण्डं ज्ञानमात्रं विशुद्धम् ॥१३॥

अर्थ—पांचों ही ज्ञान ज्ञानसामान्य की पर्यायें हैं। उन पांचों की जाति वाले सब पर्यायों में स्वभाव से एकरूप अखंड जो ज्ञानमात्र भाव है वह विशुद्धज्ञान है।

सूत्र—तदनादि ॥१४॥

अर्थ—यह विशुद्ध-सामान्य ज्ञान अनादिसिद्ध है।

सूत्र—अनन्तम् ॥१५॥

अर्थ—यह विशुद्धज्ञान अन्तरहित है।

सूत्र—अहेतुकम् ॥१६॥

अर्थ—यह विशुद्ध ज्ञान किसी भी कारण से उत्पन्न हुआ नहीं है, स्वयं से है।

सूत्र—परपरिणत्या परिणतिशून्यम् ॥१७॥

अर्थ—वह दूसरे पदार्थ की परिणति से परिणमन नहीं करता।

सूत्र—स्वपरिणामेन परिणन्त ॥१८॥

अर्थ—वह ज्ञान अपनी परिणति से ही परिणमता है।

सूत्र—सर्वशक्तिसमम् ॥१९॥

अर्थ—वह विशुद्धज्ञान समस्त आत्मशक्तियों को अपने में व्याप्त हुए है।

सूत्र—विशेषतोऽभेदषट्कारकविषयम् ॥२०॥

अर्थ—विशेषदृष्टि से विचारने पर वह सामान्यज्ञान अभिन्न छह कारकों से पहिचाना जा सकता है।

सूत्र—सामान्यतः स्वलक्षणमात्रम् ॥२१॥

अर्थ—सामान्यदृष्टि से वह विशुद्धज्ञान अपने स्वरूपमात्र है।

सूत्र—कर्तृमोक्तृत्वादिभावरहितम् ॥२२॥

अर्थ—वह विशुद्धज्ञान कर्तृत्व और भोक्तृत्व आदि भावों से रहित है।

सूत्र—निर्वृतिसृष्टयकल्पितम् ॥२३॥

अर्थ—वह विशुद्धज्ञान संसार और मोक्ष की कल्पना व रचना से परे है।

सूत्र—ज्ञानमयत्वादात्मैव तथा ॥२४॥

अर्थ—सत्यार्थदृष्टि से आत्मा भी विशुद्धज्ञान स्वरूप होने से संसार और मोक्ष की कल्पना व रचना से परे है।

सूत्र—तच्छुद्धान

अर्थ—उस शि

सूत्र—तदनुभूति सम्यग्ज्ञानम् ॥२६॥

अर्थ—उस विशुद्धज्ञान मय आत्मा का अनुभव होना सम्यग्ज्ञान है।

सूत्र—तत्स्थैर्यं सम्यक्चारित्रम् ॥२७॥

अर्थ—विशुद्ध ज्ञानमय आत्मा के अनुभव की स्थिरता को सम्यक्चारित्र कहते हैं।

इति श्रीमत्सहजानन्दवर्णिविरचिते स्वतत्त्वाधिगमे अध्यात्मसूत्रे विशुद्धज्ञानप्ररूपको नवमोऽध्याय ।



## अथ दशमोऽध्यायः

सूत्र—ज्ञानवृत्तिः संयम ॥१॥

अर्थ—आत्मा का ज्ञानमात्र परिणमन होना संयम है।

सूत्र—विशुद्धदृष्टे शुभरागप्रवृत्तिरपि संयम ॥२॥

अर्थ—जिसने विशुद्ध चैतन्यभाव का दर्शन किया है ऐसे अन्तरात्मा के शेष बचे हुए शुभ राग से होने वाली प्रवृत्ति भी संयम कहलाता है।

सूत्र—संयम पञ्चधा ॥३॥

अर्थ—वह संयम ५ प्रकार का है।

सूत्र—सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्परायथाख्यातसंयमभेदात् ॥४॥

अर्थ—१ सामायिकसंयम २ छेदोपस्थापनासंयम, ३ परिहारविशुद्धि संयम, ४ सूक्ष्मसाम्परायसंयम और ५ यथाख्यातसंयम।

सूत्र—बाह्याभ्यन्तरपरिग्रहविरतसाम्यभावः सामायिकः ॥५॥

अर्थ—बाह्य और आभ्यन्तर दोनों प्रकार के परिग्रह से विरत आत्मा के समताभाव ( अभेदसंयम ) को सामायिक संयम कहते हैं।

सूत्र—हिंसादिविरतश्छेदोपस्थापकः ॥६॥

अर्थ—हिंसा आदि पाँच पापों से विरत भावों या भेदरूप संयम को छेदोपस्थापनासंयम कहते हैं।

सूत्र—स च भेदसंयमः ॥७॥

अर्थ—यह छेदोपस्थापनासंयम भेदरूप संयम है।

सूत्र—बुद्धिपूर्वकोऽयमेव ॥८॥

अर्थ—यह संयम ही बुद्धिपूर्वक धारण किया जाता है।

सूत्र—समितिगुप्तिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजया भेदसंयमेऽन्तर्गता अभेदस्पर्शिनः ॥९॥

अर्थ—समिति, गुप्ति, धर्म, अनुप्रेक्षा ( भावना ) और परीषहजय ये सब भेद भेदसंयम में अन्तर्गत हैं तथा ये सभी भेद संयम अभेदसंयम में लगने के प्रयत्नरूप हैं।

सूत्र—सर्वेऽपि ते जोषितव्या आनिर्विकल्पसंयमात् ॥१०॥

अर्थ—ये सभी भेदसंयम निर्विकल्पसंयम से पहिले विधिपूर्वक पालन किये जाना चाहिये।

सूत्र—ऋद्धिविशेषजातः प्राणिपीडापरिहारप्रवणः परिहार

अर्थ—विशेष शुद्धि से उत्पन्न हुआ और प्राणियों की पीड़ा का पूरा परिहार करने वाला परिहारविशुद्धि संयम है।

सूत्र—अवशिष्टसूक्ष्मलोभपरिहाणिकुशला विशुद्धिः सूक्ष्मसाम्परायः ॥१२॥

अर्थ—शेष रहे हुए सूक्ष्म लोभ का अभाव करने में समर्थ जो विशुद्ध परिणाम है उसे सूक्ष्मसाम्परायसंयम कहते हैं।

सूत्र—निरुपधिस्वभावख्यातिः यथाख्यातं ॥१३॥

अर्थ—उपाधिरहित शुद्ध स्वभाव का विकाश होना यथाख्यात संयम है।

सूत्र—तदर्थं संयमः सेव्यः ॥१४॥

अर्थ—शुद्ध आत्मस्वभाव के विकाश के लिये ही संयम का सेवन करना चाहिये।

सूत्र—ततः संवरनिर्जरे ॥१५॥

अर्थ—संयम से विभाव भावों व कर्मों का संवर और निर्जरण होता है।

सूत्र—ततः सर्वपरभावविमुक्तेर्मोक्षः ॥१६॥

अर्थ—संवर और निर्जरा से समस्त परभावों और कर्मों के सर्वथा अभाव होने से मोक्ष हो जाता है।

सूत्र—स सहजज्ञानानन्दस्वरूपः स्वतः एव ॥१७॥

अर्थ—वह मोक्ष परिणमन स्वतः ही स्वाभाविक ज्ञान और आनन्द स्वरूप है।

इति श्रीमत्सहजानन्दवर्णिविरचिते स्वतत्त्वाधिगमे अध्यात्मसूत्रे संयमप्ररूपको दशमोऽध्यायः।

—०×०—

## शुद्ध कर लीजिये

| पृ | प | अशुद्ध | शुद्ध | पृ | प | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | १७ | कालाणवो | कालाणवो | ८ | १६ | भवनाश्च | भवनाथ |
| ६ | १५ | परिणता | परिणता | २१ | १६ | स्वास्ति | स्वस्ति |

प्रथम अध्याय में निम्नांकित ३ सूत्र छूट गये हैं उन्हें लिखना और सूत्र नं० १ के स्थान पर २ लिखना और १३ वें सूत्र तक एक एक बढ़ाकर लिखना चाहिये। तथा १४ वें सूत्र के स्थान पर १६ लिख कर आगे दो दो बढ़ा कर प्रथम अध्याय के अन्तिम सूत्र पर ७७ संख्या कर लेना चाहिये।

सूत्र—ॐ नमः शुद्धाय ॥१॥

अर्थ—शुद्ध चैतन्यदेव को प्रणाम हो।

सूत्र—उत्तरान्तर्दृष्ट्या पूर्वनिश्चयो व्यवहारः ॥१४॥

अर्थ—उत्तरोत्तर अन्तरङ्ग की दृष्टि होने पर पूर्व पूर्व का निश्चय व्यवहार बनता जाता है।

सूत्र—सर्वभेदप्रतिषेधगम्यो निश्चय एव ॥१५॥

अर्थ—समस्त गुण और पर्याय विषयिक भेद विकल्पों के प्रतिषेध से गम्य वस्तु निश्चयनय का ही विषय है।

---

आध्यात्मिक ग्रन्थों में सुगमतया प्रवेश कराने वाले इस अध्यात्मसूत्र के मुद्रण में श्रीमान् पं० हुकमचंद जी प्रभाकर न्यायतीर्थ एवं श्री ब्र० जीवानन्द जी महाराज व श्री पं० अक्षय कुमार जी का सहयोग प्राप्त हुआ एतदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

विद्वद्वृन्द से प्रार्थना है कि इसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो उसकी सूचना कार्यालय में भेजने की कृपा करें ताकि अगले संस्करण में शुद्ध किया जा सके। प्रकाशक—

मंत्री श्री सहजानन्द शास्त्रमाला